ओ३म

वेदाङ्ग

आर्य प्रतिनिधि सभा फीजी - प्रचार विभाग

Arya Pratinidhi Sabha Fiji
P.O. Box 4245, Samabula

OCTOBER – DECEMBER ISSUE 1996
No. 11

संस्कार

संस्कार का अर्थ

संस्कार का अर्थ है किसी वस्तु के रूप को बदल देना, उसे नया रूप दे देना। वैदिक संस्कार में मानव-जीवन के लिए सोलह संस्कारों का विधान है। इस का अर्थ यह है कि जीवन में सोलह बार मानव को बदलने का, उसके नव-निर्माण का प्रयत्न किया जाता है। जैसे सुनार अशुद्ध सोने को अग्नि में डालकर उसका संस्कार करता है उसी प्रकार बालक के उत्पन्न होते ही उसे संस्कारों की भट्टी में डालकर उसके बुराइयों को निकालकर उसमें अच्छे गुण डालने के प्रयत्न को वैदिक विचारधारा में संस्कार कहा गया है। संस्कार पहले से विद्यमान दुर्गुणों को हटाकर उनकी स्थान पर सद्गुणों का स्थापन कर देने का नाम है।

इस दृष्टि से संस्कार मानव के नव-निर्माण की योजना है। बालक का जब जन्म होता है तब दो प्रकार के संस्कार अपने साथ लेकर आता है। एक प्रकार के संस्कार तो वे हैं जिन्हें वह जन्म-जन्मान्तरों से अपने साथ लाता है। दूसरे प्रकार के संस्कार वे हैं जिन्हें वह अपने माता-पिता के संस्कारों के रूप में वंश-परम्परा से प्राप्त करता है। ये अच्छे भी हो सकते हैं, बुरे भी हो सकते हैं। संस्कारों द्वारा मानव के नव-निर्माण की योजना है जिसमें बच्चों को ऐसे चीजों से घेर दिया जाय जिससे अच्छे संस्कारों का प्रभाव हो तथा बुरे संस्कार - चाहे पिछले जन्मों के हों चाहे माता-पिता से प्राप्त हुए हों, चाहे इस जन्म में पड़ने वाले हों - उन्हें जड़ से उखाड़ दिया जाये। हमारी योजनाएं सांसारिक योजनाएं हैं संस्कारों की योजना आध्यात्मिक योजना है। हम बांध बांधते हैं, नहरें खोदते हैं, आदि, परन्तु वैदिक संस्कृति का उद्देश्य है उस मानव का निर्माण करना जिसके लिए बांध बांधे जाते हैं, नहरें खोदी जाती हैं।

मानव के नव-निर्माण की योजना

जो देश उन्नति करने लगता है वह योजनाओं का तांता-सा बांध देता है। कोई पंच वर्षीय योजनाएं बनाता है, कोई दस-वर्षीय, परन्तु क्योंकि हमारी दृष्टि सांसारिक चीजों तक सीमित है इसलिए हमारी योजनाओं का उद्देश्य बांध बांधना नहरें खोदना, सड़कें बनाना तथा घर आदि बना देने मात्र रह जाता है। हम सांसारिक दृष्टिकोण के कारण समझे बैठे हैं कि मानव का सब से बड़ा प्रश्न रोटी का प्रश्न है। रोटी का प्रश्न हल हो गया, तो दुनियां के सब प्रश्न हल हो गए। हमारी समझ में मानव भूख-प्यास का पुतला है, इस के सिवाय कुछ नहीं। वैदिक विचारधारा मानव को शरीर मात्र नहीं समझती। इस में संदेह नहीं कि सांसारिक योजनाएं भी चलनी चाहिए, परन्तु आध्यात्मिक - दृष्टि से ये योजनाएं अत्यन्त प्रारंभिक योजनाएं हैं। वैदिक संस्कृति की असली योजना, वह योजना जिसके लिए इस संस्कृति ने जन्म लिया, संस्कारों द्वारा मानव का नव-निर्माण करना है। हम घर बनाते हैं, सड़कें बनाते हैं तथा रेलें बिछाते हैं, परन्तु वह मानव जिसके लिए यह सब कुछ करते हैं, वह कहां है? उसके लिए पंच-वर्षीय या दस वर्षीय कौन-सी योजना बनाई है? रेलों का तांता बिछ जाए, घर-घर मोटरें पहुंच जाएं, जमीन के चप्पे-चप्पे पर नहरों का पानी चला जाय, उत्पादन बहुत हो जाए, परन्तु इन सब का उपभोग करने वाला मानव अगर न हो, दूसरे के दुख में दुखी और सुख में सुखी होने वाला न हो, दुराचारी हो, भ्रष्टाचारी हो, बुरी आदतें वाला हो, तो ये घर, मोटर, आदि किस काम आएंगे। क्या ऐसा हो नहीं रहा? क्या चारों तरफ चकाचौंध कर देने वाले वैभव की बढ़ती के साथ-साथ मानव का-उस मानव का, जिसके लिए यह संपूर्ण वैभव खड़ा किया जा रहा है - दिनोंदिन दुखी हो रहा है। मानव कहां है? कहां है वह मानव जिसमें मानवता हो वह मानव जो लालच के प्रचण्ड बबण्डर उठ खड़े होने पर उसे तिनकों की तरह परे फेंक दे। वैदिक-संस्कृति की सब से बड़ी योजना और उस योजना का केन्द्र बिन्दु, संस्कारों द्वारा मानव का नव-निर्माण था।

मानव के निर्माण का आधार संस्कार पद्धति

अगर यह ठीक है कि बालक जन्म-जन्मान्तर के और माता-पिता के संस्कारों को लेकर आता है, तो प्रश्न उठ खड़ा होता है कि संस्कार पद्धति द्वारा इस छोटे से जन्म में जो हम संस्कारों की प्रक्रिया करते हैं, उनसे जन्म जन्मान्तरों के जमा हुए संस्कार कैसे मिट सकते हैं। हमने न-जाने पिछले जन्मों में कितने कर्म किये, अच्छे किये, बुरे किये, उन सब को एक-एक कर के भोगे बिना केवल इस जन्म के संस्कारों से कैसे बदला जा सकता है? क्या ये एक जन्म के संस्कार पिछले इकट्ठे हुए अनन्त जन्मों के कर्मों के बोझ को, उन कर्मों से पड़े हुए संस्कारों को मिटा सकते हैं?

यहाँ संस्कार का प्रश्न कर्म का प्रश्न बन जाता है। क्या पिछले जन्म के संस्कारों को इस जन्म के संस्कार से मिटाया जा सकता है? एक-एक कर्म, अच्छा हो, बुरा हो, दर्ज किया जाता है। हर काम की छानबीन होती है, हर कर्म का फल मिलता है, जब तक एक-एक कर्म का फल नहीं मिल जाता तब तक कर्म बैठा रहता है, मिटता नहीं। कोई कार्य बिना कारण के नहीं होगा और हर कारण का कार्य अवश्य होगा। जिसे हम कारण कहते हैं वह पिछले जन्म का कार्य होता है, जिसे